विचार बिन्दु

त्याग यह नहीं कि मोटे और खुरदरे वस्त्र पहन लिए जायें और सूखी रोटी खायी जाये, त्याग तो यह है कि अपनी इच्छा अभिलाषा और तृष्णा को जीता जाये। - सुफियान सौरी

त्यौहारी सीजन में सेहत पर मंडराया मिलावट का खतरा

त्योहारी सीजन शुरू होते ही मिलावटिये भी सक्रीय होकर आमजन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करते है। त्योहार आये और मिलावटिये सक्रीय न हो ऐसा हो नहीं सकता। अब तो मिलावट और त्योहार का लगता है चोली दामन का साथ हो गया है। राजधानी जयपुर की पुलिस ने हाल ही मिलावटखोरी के एक बड़े नेटवर्क का पर्दाफ़ाश करते हुए 1800 किलो नकली पनीर को दुकानों पर पहुंचने से पहले ही पकड लिया। यह पनीर हरियाणा के मेवात इलाके से जयपुर में सप्लाई के लिए लाया जा रहा था। पुलिस का कहना है अगर यह नकली पनीर बाजार में पहुंच जाता, तो लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता था। यह तो एक बानगी है। इससे पूर्व न जाने कितनी नकली पनीर बाज़ारों में पहुँच गई होंगी।

देश में त्योहारी सीज़न शुरू हो गया है। दीपावली तक त्योहारों की धूम रहेगी। त्योहारी सीजन की श्रृंखला रक्षा बंधन से शुरू हो गई जो दीपावली के साथ समाप्त होंगी। इस अवसर पर गरीब और अमीर सभी वर्ग के लोग अपने सामर्थ्य के अनुरूप घर की साफ–सफाई, नए कपड़े, सोने चांदी के सामान के साथ मिठाइयां बनाने और खरीदने में व्यस्त हो जाते है। इस दौरान घर–घर में मीठे पकवान बनते है। पर्वों पर बिकने वाली मिठाइयों की तैयारियां भी जोरों पर हैं, लेकिन बाजार में बिकने वाली मिठाई कितनी शुद्ध होगी, इसकी कोई गारंटी नहीं है। त्योहारों के मौके पर मिलावटी मिठाइयों का भरपूर कारोबार होने की संभावना को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को सचेत रहने की भी जरूरत है। ऐसे में सोच–समझकर ही मिठाइयों को खरीदें। कहते है सावधानी हटी और दुर्घटना घटी। इसे ध्यान में रखते हुए अगर मिठाइयों को परखने में चूक गए तो मिलावटी मिठाइयां आपके सेहत पर भारी पड़ सकती हैं। बड़े से लेकर छोटे शहरों और ग्रामों में मिलावटखोर सक्रिय हो जाते हैं। दूध से लेकर खोया और घी, तेल तक में मिलावट की जाती है। हालांकि देशभर में मिलावटियों पर छापे मारे जा रहे है और मिलावटी सामग्री जब्त की जा रही है। मगर यह छापेमारी ऊंट के मुंह में जीरे के सामान है।

आम आदमी महंगाई के साथ खाद्य पदार्थो में हो रही मिलावट खोरी से खासा परेशान रहता है। हमारे बीच यह धारणा पुख्ता बनती जा रही है कि बाजार में मिलने वाली हर चीज में कुछ न कुछ मिलावट जरूर है। लोगों की यह चिंता बेबुनियाद नहीं है। आज मिलावट का कहर सबसे ज्यादा हमारी रोजमर्रा की जरूरत की चीजों पर ही पड़ रहा है। खाने पीने के पदार्थो में मिलावट कोई नयी समस्या नहीं है। मिलावट और खराब उत्पाद बेचे जाने की खबरें आम हो चुकी हैं। साल–दर–साल इसका दायरा व्यापक होता जा रहा है। खाद्य पदार्थों में मिलावट ने हमारा जीना हराम कर रखा है। हर चीज में मिलावट ने हमारी जिंदगी की रफ्तार को अवरुद्ध कर दिया है। शरीर का हर हिस्सा जैसे मिलावट से कराह रहा है। जितनी चोटें युद्ध भूमि में राणा सांगा ने नहीं खाई होंगी उतनी हम मिलावटी वस्तुओं से रोज ही खा रहे हैं। इसका मतलब बिलकुल साफ है कि हमारा शरीर पूरी तरह मिलावटी हो गया है।

आज खाने-पीने सहित सभी चीजों में धड़ल्ले से मिलावट हो रही है। ऐसा कोई भोज्य पदार्थ नहीं है, जो जहरीले कीटनाशकों और मिलावटों से मुक्त हो। बाजार में पपीता, आम और केला, सेव, अनार जैसे फलों को कैल्शियम कार्बाईड की मदद से पकाया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार यह स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक है। फलों को सुनहरा बनाने के लिए पैराफीनवैक्स भी लगाया जाता है। इन फलों को खाने से कैंसर और डायरिया जैसी बीमारियां होती है।

खाद्य पदार्थों में अशुद्ध, सस्ती अथवा अनावश्यक वस्तुओं के मिश्रण को मिलावट कहते हैं। आज समाज में हर तरफ मिलावट ही मिलावट देखने को मिल रही है। पानी से सोने तक मिलावट के बाजार ने हमारी बुनियाद को हिला कर रख दिया है। पहले केवल दूध में पानी और शुद्ध देशी घी में वनस्पति घी की मिलावट की बात सुनी जाती थी, मगर आज घर–घर में प्रत्येक वस्तु में मिलावट देखने और सुनने को मिल रही है। मिलावट का अर्थ प्राकृतिक तत्त्वों और पदार्थों में बाहरी, बनावटी या दूसरे प्रकार के मिश्रण से है।

मुनाफाखोरी करने वाले लोग रातोंरात धनवान बनने का सपना देखते हैं। अपना यह सपना साकार करने के लिए वे बिना सोचे–समझे मिलावट का सहारा लेते हैं। सस्ती चीजों का मिश्रण कर सामान को मिलावटी कर महंगे दामों में बेचकर लोगों को न केवल धोखा दिया जाता है, बल्कि हमारे स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ भी किया जाता है। मिलावटी खाद्य पदार्थों के सेवन से प्रतिवर्ष हजारों लोग विभिन्न बीमारियों का शिकार होकर जीवन से हाथ धो बैठते हैं। मिलावट का धंधा हर तरफ देखने को मिल रहा है। दूध बेचने और मिलावट करने वाले से लेकर बहुराष्ट्रीय कंपनियों तक ने मिलावट के बाजार पर अपना कब्जा कर लिया है।

सत्य तो यह है कि हम जो भी पदार्थ सेवन कर रहे हैं चाहें वे खाद्य पदार्थ हो या दूसरे, सब में मिलावट ही मिलावट हो रही है। मिलावट ने अपने पैर जबरदस्त तरीके से फैला लिए हैं। दूधिए की मिलावट तो एक उदाहरण के रूप में है। मगर आज हर वस्तु में मिलावट से हमारा वातावरण प्रदूषित और जहरीला हो उठा है। दूध, मावा, घी, हल्दी, मिर्च, धनिया, अमचूर, सब्जियां, फल आदि सभी मिलावट की चपेट में है। आज खाने–पीने सहित सभी चीजों में धड़ल्ले से मिलावट हो रही है। ऐसा कोई भोज्य पदार्थ नहीं है, जो जहरीले कीटनाशकों और मिलावटों से मुक्त हो। बाजार में पपीता, आम और केला, सेव, अनार जैसे फलों को कैल्शियम कार्बाईड की मदद से पकाया जाता है। चिकित्सकों के अनुसार यह स्वास्थ्य के लिए काफी हानिकारक है। फलों को सुनहरा बनाने के लिए पैराफीनवैक्स भी लगाया जाता है। इन फलों को खाने से कैंसर और डायरिया जैसी बीमारियां होती है। डेयरी और कृषि उत्पादों–विशेषकर हरी सब्जियों में ऑक्सिटोसिन का खूब इस्तेमाल हो रहा है। सच तो यह है अधिक मुनाफा कमाने के लालच में नामी कंपनियों से लेकर खोमचे वालों तक ने उपभोक्ताओं के हितों को ताख पर रख दिया है। अगर कोई इन्हें खाकर बीमार पड़ जाता है तो हालत और भी खराब है, क्योंकि जीवनरक्षक दवाइयाँ भी नकली ही बिक रही हैं।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 23 अगस्त, 2025

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, अमावस्या, शनिवार, विक्रम संवत 2082, मघा नक्षत्र रात्रि 12:55 तक, परिघ योग दिन 1:20 तक, नाग करण दिन 11:36 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य–सिंह, चन्द्रमा–सिंह, मंगल–कन्या, बुध–कर्क, गुरू–मिथुन, शुक्र–कर्क, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह राशि में।

आज देव पितृकार्या अमावस्या और कुशाग्रहणी अमावस्या, शनिचरी अमावस्या, सती पूजन है। आज अश्वत्थ मारूती पूजन है। आज शहादते इमाम हसन है। आज से राष्ट्रीय भाद्रपद मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:50 से 9:20 तक, चर 12:18 से 1:47 तक, लाभ–अमृत 1:47 से 4:46 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:06, सूर्यास्त 6:53

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या–वैमनस्यता के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। खान–पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

धनु

धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक व्यावसायिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष

घर–परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त–व्यस्त हो सकती है। परिवार में आपसी वाद–विवाद हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कन्या

आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। धन हानि का भय है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव–प्रभुत्व बढ़ेगा।

मीन

स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुत्तों से नफ़रत क्यों? एक सवाल जो भारत को खुद से पूछना चाहिए

मरियम अबुहैदरी

आपने पहली बार कब तय किया कि कुत्ते नफ़रत के काबिल हैं? क्या वो सुबह थी जब आपने दरवाज़ा खोला और देखा कि एक भूखा कुत्ता आपके कूड़े में से टुकड़े तलाश रहा है? या वो दिन, जब आपने अख़बार में किसी कुत्ते के काटने की सनसनीख़ेज़ हेडलाइन पढ़ी–एक ख़ून–ख़राबे वाली तस्वीर के साथ, जो अक्सर एआई से बनाई गई थी? या शायद वो वक्त, जब कुत्तों का एक झुंड आपके पीछे दौड़ा–संभव है क्योंकि आपने या आपके घरवालों ने उन्हें पत्थर मारकर या खाना रोककर उनका जीवन कठिन बना दिया हो, या फिर किसी वाहन ने माँ कुतिया के बच्चों को कुचल दिया हो और वे अपने बचे–खुचे संसार की रक्षा कर रहे थे? आपने आसपास के दूसरे जीवन–रूपों के प्रति सहनशील होना कब छोड़ दिया? क्या सच में यह जानवर के बारे में है–या आपके भीतर की उस बेचैनी के बारे में, जो उनकी मौजूदगी बर्दाश्त नहीं कर पाती?

हम भारतीयों ने सहस्त्राब्दियों से कुत्तों के साथ जीवन बिताया है। हमारे महाकाव्यों और शास्त्रों में उनके स्थान की यादें भरी पड़ी हैं। महाभारत में युधिष्ठिर ने स्वर्ग में प्रवेश से इनकार कर दिया जब तक उनका वफ़ादार कुत्ता उनके साथ न आ सके। यह कहानी आज भी हमें चुनौती देती है: वह स्वर्ग किस काम का, जहाँ वफ़ादारी और प्रेम को द्वार के बाहर छोड़ना पड़े? गीता में कृष्ण योग और समभाव का उपदेश देते हैं–सभी प्राणियों को समान दृष्टि से देखना ही सच्चा धर्म है। करुणा चुनिंदा नहीं होती। यह केवल उनके लिए नहीं होती जो हमारी तरह दिखते हैं, हमारे जैसा पूजते हैं या हमारी भाषा बोलते हैं।

लेकिन 2025 में हम यहाँ हैं–बहस करते हुए कि आवारा कुत्ते जीने के लायक हैं या नहीं। क्या हमारे मोहल्ले बेहतर होंगे अगर उन्हें हटा दिया जाए? क्या क्रूरता को सुरक्षा के नाम पर जायज़ ठहराया जा सकता है? हम भूल जाते हैं कि क्रूरता सुरक्षा नहीं है। यह संक्रामक है। यह फैलती है। और यह धीरे–धीरे हमारे आपसी व्यवहार में भी उतर आती है। ज़रा सोचिए: क्या कुत्ते काटते हैं मज़े के लिए? या डर के लिए? अगर कोई बच्चा बरसों तक कुत्तों पर पत्थर बरसाता है–क्योंकि बड़ों ने उसे सिखाया कि कुत्ते गंदे हैं, ख़तरनाक हैं, या बेकार हैं–तो आखिरकार क्या होगा? एक दिन, वह कुत्ता भी जवाब देगा। एक दिन, वह अपनी रक्षा करेगा। और फिर जब दाँत गड़ेंगे, तो आप दोष कुत्ते को देंगे? या एक पल रुककर पूछेंगे: यह कैसी समाज है, जो अपने बच्चों को मेलजोल और सामंजस्य सिखाने के बजाय हिंसा भड़काना सिखाती है?

हम अक्सर इस हिस्से का सामना नहीं करते। हमें लगता है कि बच्चे मासूम हैं, लेकिन मासूमियत को मोड़ा जा सकता है। आज पत्थर फेंकना, कल किसी की पीड़ा के प्रति बेरुख़ी बन सकता है। क्या हम सचमुच ऐसी पीढ़ी पालना चाहते हैं, जिसे लगे कि कमज़ोर पर हिंसा करना सामान्य है? बच्चों को यह सिखाने के बजाय कि कुत्तों के साथ कैसे रहना है–जगह का सम्मान कैसे करना है, कैसे शांत रहना है, कैसे खिलाना है–हम उन्हें आसान शिकार बना रहे हैं। क्योंकि जब शत्रुता आदत बन जाती है, तो प्रतिरोध सिर्फ़ समय की बात होती है। एक बार अपनी जगह कुत्ते की जगह खुद को रखकर सोचिए: अगर हर दिन आपको मारा–पीटा, दौड़ाया, पत्थर मारा जाए–तो आप क्या करेंगे? लेकिन ज़रा बताइए: क्या यह आपको स्वीकार्य है कि लोग कुत्तों के साथ बलात्कार कर रहे हैं? पिल्लों को ज़िंदा जलाया जा रहा है? मासूम, शांत कुत्तों को इमारतों से नीचे फेंककर मार दिया जा रहा है? सोचिए, हम समाज के तौर पर क्या बन गए हैं–और पशु प्रेमियों को हर दिन क्या देखना और झेलना पड़ता है–सिर्फ़ इसलिए क्योंकि वे अब भी उम्मीद रखते हैं कि समझदारी जीतेगी। हर दिन यह सवाल गले में अटकता है: इन जानवरों ने ऐसा क्या किया है कि वे इंसानों की नफ़रत झेलें?

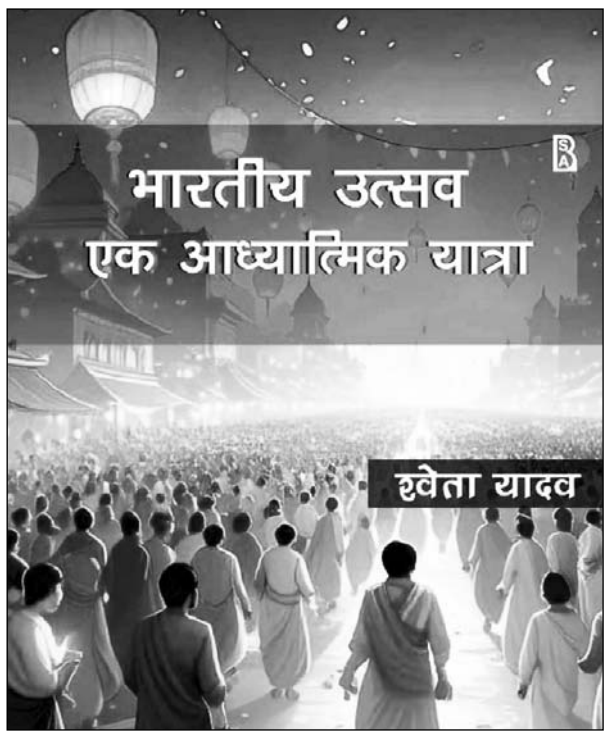

अब आते हैं सदाबहार शिकायतों पर: कुत्ते भौंकते हैं, काटते हैं, गंदगी फैलाते हैं, शांति भंग करते हैं। जैसे किसी जमाने में कुत्ते चुपचाप बैठे रहते थे, शौचालय में ही शौच करते थे और नागरिकों की तरह सलीके से चलते थे। सच यह है कि कुत्ते तो हमेशा से भौंकते रहे हैं, गंदगी भी करते रहे हैं–जब हमारे कस्बे छोटे थे, सड़कें कच्ची थीं और धैर्य ज़्यादा था। कुत्ते नहीं बदले हैं; हम बदले हैं। हमारी सहनशीलता घट गई है, हमारी करुणा सूख गई है। अचानक, हर वह जीवन जो हमारे नियंत्रण से बाहर है, उपद्रव घोषित कर दिया गया। और मान लीजिए, अगर गंदगी ही असली मुद्दा है, तो कुत्ते उसमें चैंपियन नहीं हैं। बेघर इंसान ज़्यादा गंदगी फैलाते हैं। और वे हाउसिंग सोसाइटीज़ जो दावा करती हैं कि कुत्ते गंदगी करते हैं–पहले उन्हें अपने गेट के पास लगे कचरे के पहाड़ देख लेने चाहिए। मगर नहीं, आवाज़हीन पर दोष मढ़ना आसान है। और यह तथाकथित ;डॉग बाइट डेटा; ! हर रेबीज़ का टीका अपने आप ; कुत्ते के काटने; के केस के तौर पर दर्ज हो जाता है। शुक्र है कि रजिस्टर कुत्ते नहीं रखते, वरना आप उसका भी इल्ज़ाम उन्हीं पर डाल देते। और ऊपर से, इसमें पालतू और आवारा काटने का कोई फ़र्क नहीं है। लैब्राडोर का काटना, जर्मन शेफर्ड का हमला, रॉटवीलर की पकड़–सब एक ही खाते में। मगर अजीब बात है, गुस्सा सबसे ज़्यादा हमेशा उसी कुत्ते पर उतरता है जो देसी है, भूरे रंग का है, सड़क पर जन्मा है। अगर समस्या सचमुच ;बहुत सारे कुत्तों; की है, तो पूछना चाहिए कि ये पिल्ले आते कहाँ से हैं? लोग ब्रीडरों से खरीदते क्यों हैं जब शेल्टर पहले से भरे पड़े हैं? जब कोई ब्रीडिंग मादा ;लाभदायक; नहीं रहती, उसे अक्सर अधबचिया, नसबंदी के बिना, सड़क पर छोड़ दिया जाता है। परिवार जब खर्चा बढ़ जाता है, शहर बदलना होता है या ;शौक़; ख़त्म हो जाता है, तो वे भी अपने पालतू छोड़ देते हैं। ये सब भी बिना नसबंदी के होते हैं और मोहल्ले के कुत्तों के साथ मिलकर और बच्चे पैदा करते हैं। अगर अनियंत्रित जनसंख्या सच में चिंता का कारण है, तो गुस्सा ब्रीडरों पर क्यों नहीं है? सिर्फ़ उस पर क्यों जो सड़क पर जीवित रहने की कोशिश कर रहा है?

हमारे शास्त्र और परंपरा याद दिलाते हैं कि कुत्ते पूजनीय रहे हैं। युधिष्ठिर की करुणा, ऋग्वेद में सरमा की सच्चाई, भैरव के द्वार पर प्रहरी, गीता की समभाव की शिक्षा–ये सब केंद्रीय कथाएँ हैं। और संविधान भी यही कहता है: अनुच्छेद 51(ग) में लिखा है कि हर नागरिक का मूल कर्तव्य है वनों, नदियों, झीलों, जंतुओं का संरक्षण करे और सभी जीवित प्राणियों के प्रति करुणा रखे। जब हम कुत्तों से नफ़रत को जायज़ ठहराते हैं, तो हम न सिर्फ़ अपनी संस्कृति से गद्दारी करते हैं बल्कि संविधान से भी।

तो ज़रा ठहरकर पूछिए: इस नफ़रत से हासिल क्या हुआ? कुत्ते अब भी हैं। कचरे के ढेर अब भी हैं। ब्रीडर अब भी हैं। नसबंदी कार्यक्रम अब भी भ्रष्टाचार और फंड की कमी से जूझते हैं। मगर मोहल्ले टूट रहे हैं, रिश्ते बिगड़ रहे हैं, परिवार बँट रहे हैं। नफ़रत ने कुछ हल नहीं किया–सिर्फ़ सबकुछ ज़हरीला बना दिया। असल समस्या कुत्ते नहीं हैं। असल समस्या हमारी करुणा का सूख जाना है। तो अगली बार जब आप कुत्ते को देखकर गुस्से से भर जाएँ, खुद से पूछिए: यह नफ़रत मैंने कब पालनी शुरू की थी, और इसने मुझे दिया क्या? और फिर याद कीजिए–युधिष्ठिर का इंकार, सरमा की सच्चाई, भैरव का रक्षक, गीता का समभाव, अंबेडकर का संविधान। सब एक ही बात कह रहे हैं: दयालु बनो और साथ जियो।

–मरियम अबुहैदरी,
भारतीय नागरिक और पशु अधिकार कार्यकर्ता

पुस्तक समीक्षा : ''भारतीय उत्सवः एक आध्यात्मिक यात्रा''

श्वेता यादव द्वारा रचित ग्रंथ-''भारतीय उत्सवः एक आध्यात्मिक यात्रा'' धार्मिक आयोजनों का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है

प्रो. प्रदीप शर्मा

- **इस पुस्तक में हिंदू पंचांग के अनुसार वर्षभर के व्रत, त्यौहार, पर्व, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रांति आदि को महीनेवार व्यवस्थित किया गया है**

भारत विविधताओं का देश है जहां हर महीने किसी न किसी पर्व, व्रत या उत्सव का आयोजन होता है। श्वेता यादव द्वारा रचित यह ग्रंथ–'भारतीय उत्सवः एक आध्यात्मिक यात्रा' – न केवल इन धार्मिक आयोजनों का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत करता है, बल्कि इनके पीछे छिपे गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी उजागर करता है। यह पुस्तक एक विशेष पहलू के साथ सामने आती है। इसमें हिंदू पंचांग के अनुसार वर्षभर के व्रत, त्योहार, पर्व, एकादशी, पूर्णिमा, अमावस्या, संक्रांति आदि को महीनेवार व्यवस्थित किया गया है। चैत्र से लेकर फाल्गुन तक, पाठक को हर माह के प्रमुख धार्मिक आयोजनों की स्पष्ट जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक उत्सव की ऐतिहासिक, पौराणिक एवं आध्यात्मिक पृष्ठभूमि को सरल, तथ्यात्मक और भावनात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक का 'प्राक्कथन' स्वयं इस कृति की आत्मा को प्रतिबिंबित करता है। यह रचना केवल एक सूची या जानकारी संग्रह नहीं है, बल्कि यह पाठक को भारतीय संस्कृति की गहराइयों तक ले जाने वाला अध्यात्मिक पुल है। लेखक ने बड़े शोध और अनुभव के साथ हर त्योहार की महत्ता, विधि–विधान और उससे जुड़ी लोककथाओं को सहज भाषा में समझाया है।

यह पुस्तक न केवल विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं और अध्यापकों के लिए उपयोगी है, बल्कि आम पाठक, धार्मिक श्रद्धालु एवं भारतीय जीवनशैली को समझने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए उपयोगी है। पुस्तक में चित्रों और प्रसंगों के माध्यम से रोचकता बनाए रखी गई है, जिससे यह केवल एक धार्मिक संदर्भ ग्रंथ नहीं, बल्कि आत्मचिंतन और सांस्कृतिक गौरव का अनुभव कराने वाली कृति बन जाती है।

पुस्तक की प्रमुख विशेषताएँ :– हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष भर के व्रत–त्योहारों का क्रमबद्ध और सारगर्भित विवरण, प्रत्येक व्रत व उत्सव की पौराणिक, ऐतिहासिक एवं आध्यात्मिक व्याख्या, सरल, भावप्रधान व शोधपरक लेखन शैली, धार्मिक विषयों के माध्यम से संस्कार, कर्तव्य और संस्कृति का प्रचार, चित्रों, प्रसंगों व दृष्टांतों से सजीव प्रस्तुति, सभी वर्गों के लिए उपयोगी – विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक, गृहस्थ, साधक एवं सामान्य पाठक।

'भारतीय उत्सव : एक आध्यात्मिक यात्रा' एक ऐसी कृति है, जो पाठक को भारत की आध्यात्मिक विरासत और सांस्कृतिक गरिमा से जोड़ती है। यह केवल व्रत–त्योहारों की सूची नहीं, बल्कि एक ऐसी आध्यात्मिक यात्रा है, जो आत्मानुशासन, श्रद्धा और धर्म के मूल भाव को जीवन में उतारने की प्रेरणा देती है। यह पुस्तक हर भारतीय परिवार, विद्यालय, पुस्तकालय तथा शोध संस्थानों में स्थान पाने योग्य है।

समीक्षक : प्रो. प्रदीप शर्मा,
डीन, वाणिज्य संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय।

अंतर्राष्ट्रीय सीमावर्ती क्षेत्र की 17 चौकियों पर सैनिकों की नेत्र जांच की

रामदेवरा में चल रहे लोकदेवता बाबा रामदेव नेत्र कुम्भ के अन्तर्गत सक्षम संगठन ने पहली बार बीएसएफ के जवानों तक नेत्र चिकित्सा सेवा पहुंचाई

- **लगभग 250 बीएसएफ जवानों की आँखों की जांच, परामर्श और उपचार किया, जांच के समय कई जवानों की दृष्टि सम्बन्धी समस्याएं सामने आई**
- **सक्षम संगठन का यह अनूठा अभियान इस बात का उदाहरण है कि चाहे तीर्थयात्री हों या देश के प्रहरी, नेत्र चिकित्सा की यह रोशनी सब तक पहुंचनी चाहिए**

पोकरण/रामदेवरा, (निसं)। रामदेवरा में चल रहे लोक देवता बाबा रामदेव नेत्र कुम्भ के अन्तर्गत शुक्रवार को सक्षम संगठन ने अपने राष्ट्रसेवी संकल्प को चरितार्थ करते हुए पहली बार बीएसएफ के उन जवानों तक नेत्र चिकित्सा सेवा पहुँचाई, जो पाकिस्तान से लगती अन्तर्राष्ट्रीय सीमा पर दिन–रात देश की रक्षा में तैनात रहते हैं।

दिल्ली से आई एक विशेष आधुनिक नेत्र चिकित्सा से सुसज्जित वैन रामदेवरा से निकलकर सीमा की ओर रवाना हुई। इस वैन में सभी अत्याधुनिक नेत्र जांच उपकरण और अनुभवी विशेषज्ञ मौजूद थे। यह वैन सीधे 17 सीमा चौकियों तक पहुंची और वहां तैनात लगभग 250 बीएसएफ जवानों की आँखों की जांच, परामर्श और उपचार किया गया। इस ऐतिहासिक पहल में सीमाजन कल्याण समिति राजस्थान प्रदेश महामन्त्री एवं नेत्र कुम्भ रामदेवरा के महामन्त्री खेताराम लीलड, ट्रान्सविजन कंपनी के सुरेश कुमार, मिस्बाह और सक्षम के वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ. हजारी राम का विशेष समन्वय और मार्गदर्शन रहा। जाँच के समय कई जवानों की दृष्टि सम्बन्धी समस्याएं सामने आईं। तत्काल उन्हें उचित दवाइयां और चश्मे वितरित किए गए। साथ ही भविष्य में आँखों की देखभाल हेतु परामर्श भी प्रदान किया गया।

नेत्र कुम्भ आयोजन समिति के महासचिव खेताराम लीलड ने कहा कि सक्षम संगठन का उद्देश्य केवल तीर्थ यात्रियों तक ही सीमित नहीं है। सीमा पर तैनात हमारे जवान देश की ढाल है। उनकी आँखें स्वस्थ रहेंगी तो वे और अधिकता सतर्कता से अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए चौकसी कर पायेंगे। आज यह सेवा उनके द्वार तक पहुंचाना हम सभी के लिए गर्व का विषय है। वरिष्ठ नेत्र विशेषज्ञ डॉ. हजारी राम ने बताया कि सीमा चौकियों पर जाकर जांच करने का अनुभव बहुत भावुक करने वाला रहा। कई जवान वर्षो से आँखों की समस्याओं से जूझ रहे थे, लेकिन सुविधाओं के अभाव में इलाज नहीं करा पाए। सक्षम संगठन का यह प्रयास उनकी आवश्यकता को वहीं पूरा करता है जहाँ वे तैनात हैं।

ट्रान्सविजन कंपनी के प्रतिनिधि सुरेश कुमार व मिस्बाह ने कहा यह पहल ''नेत्र चिकित्सा आपके द्वार'' की सच्ची परिभाषा है। हमारे जवानों की आँखों की सेहत ही उनकी सतर्कता की गारंटी है। सक्षम ने इस कार्य से न केवल सेवा की है बल्कि देशप्रेम की नई शुरुआत की है।

यह पहली बार है जब नेत्र कुम्भ की सेवाएं सैंकड़ों किलोमीटर दूर अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक पहुंचाई गई है। यह प्रयास यह सिद्ध करता है कि सक्षम संगठन केवल शिविर स्थल तक सीमित नहीं है, बल्कि जहां आवश्यकता है, वहां तक पहुंचना ही इसका वास्तविक उद्देश्य है। सक्षम संगठन का यह अनूठा अभियान इस बात का उदाहरण है कि चाहे तीर्थयात्री हों या देश के प्रहरी, नेत्र चिकित्सा की यह रोशनी सब तक पहुंचनी चाहिए। जिस बीज का अंकुरण 673 साल पहले लोकदेवता बाबा रामदेव जी मारवाड की धरा पर किया था उसीका सशक्त पर्याय बन गया है रामदेवरा में चल रहा नेत्रकुम्भ। एक अगस्त से लेकर 2 सितम्बर तक जाट धर्मशाला के सामने संचालित हो रहा नेत्र जांच और आवश्यकता के हिसाब से उपयुक्त चश्में और परामर्श का दायरा नेत्रकुम्भ तक सीमित न होकर पूरे मरुप्रदेश तक फैल गया है। समर्पित कार्यकर्तो बसों, एम्बुलेंस यहाँ तक कि अपने दुपहिया वाहनों पर जातरुओं को लेकर आ रहे हैं और जाँच करवा रहे हैं। ज्यादा से ज्यादा लाभार्थियों की नेत्र जांच हो और नेत्रकुम्भ में स्थापित सेवाओं का लाभ सभी को प्राप्त हो इसके लिए सेवाभावी कार्यकता जुट हुए हैं।